17 मार्च 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 33, अंक : 24 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (द्वितीय), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

सीमंधर जिनालय एवं त्रिमूर्ति जिनालय के नवीनीकरण का -

शिलान्यास समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 2 मार्च 2011 को सीमंधर जिनालय एवं त्रिमूर्ति जिनालय के नवीनीकरण का शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी सेठी, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री प्रकाशचंदजी सेठी, श्री चेतनजी सेठी, श्री रतनजी सेठी, श्री प्रमोदजी जैन जयपुर प्रिंटर्स आदि महानुभाव मंचासीन थे।

समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री प्रकाशचंदजी सेठी ने कहा कि जब से प्रवचन हॉल का नवीनीकरण हुआ है, तभी से हमारे परिवार की भावना जिनालय के नवीनीकरण की भी थी। आज यह योग बना और हमारी भावना साकार हुयी। इसका मुझे विशेष आनंद है।

डॉ. भारिल्ल ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि संस्था के लिए अभी यह स्वर्णकाल आया है और उसकी प्रगति में नित नये आयाम जुड़ रहे हैं।

शिलान्यास सभा का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं मंगलाचरण विवेक जैन दिल्ली ने किया।

समारोह के पूर्व प्रात: 7 बजे से त्रिमूर्ति जिनालय में नित्यनियम पूजन एवं शांतिविधान का आयोजन किया गया। मंगल कलश श्रीमती शशि सेठी परिवार द्वारा विराजमान किया गया। विधान में महाविद्यालय के छात्रों के साथ अनेक साधर्मियों की उपस्थिति रही।

विधान के उपरांत त्रिमूर्ति एवं सीमंधर जिनालय के नवीनीकरण का शिलान्यास श्री प्रकाशचंदजी-शशिजी सेठी परिवार द्वारा किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं महाविद्यालय के छात्रों ने संपन्न कराये।

प्रशिक्षण शिविर में अवश्य पधारें !

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा द्वारा टोडरमल स्मारक भवन, बापूनगर, जयपुर में आयोजित 45वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष रविवार, दिनांक 15 मई से बुधवार, 1 जून 2011 तक आयोजित होने जा रहा है।

इस शिविर में डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ तो प्राप्त होगा, साथ ही धार्मिक अध्ययन करानेवाले बन्धुओं (अध्यापकों) एवं मुमुक्षु भाईयों को शिक्षण विधि में प्रशिक्षित भी किया जायेगा।

आप सभी शिविर में लाभ लेने हेतु अवश्य पधारें।

अपने आने की पूर्व सूचना 30 अप्रैल तक जयपुर अनिवार्य रूप से भेज देवें ताकि आपके आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

श्री टोडरमल स्मारक भवन में -

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित त्रिमूर्ति एवं सीमंधर जिनालय के नवीनीकरण का कार्य प्रारंभ किया गया है। इसके अन्तर्गत 'त्रिमूर्ति एवं सीमंधर जिनालय' नवीन साज-सज्जा के साथ बनकर तैयार हो रहे हैं। इसी क्रम में त्रिमूर्ति जिनालय पर 2 नई वेदियाँ एवं सीमंधर जिनालय में 1 नई वेदी बन रही है, जिन पर नवीन प्रतिमाओं को विराजमान किया जावेगा।

इन प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा हेतु एक आदर्श, भव्य एवं ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 24 से 30 दिसम्बर 2012 तक किया जा रहा है। यह घोषणा डॉ. भारिल्ल द्वारा 2 मार्च को आयोजित शिलान्यास समारोह के दौरान की गयी।

ज्ञातव्य है कि टोडरमल स्मारक भवन में सन् 1991 की प्रतिष्ठा के बाद लगभग 22 वर्षों बाद यह विशाल आयोजन सम्पन्न होने जा रहा है।

इसके संदर्भ में प्रगति के समाचार यथा समय प्रकाशित किये जाते रहेंगे।

सम्पादकीय – (52)

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ८२

विगत गाथा में परमाणुरूप द्रव्य में गुण–पर्यायें होने का कथन है। प्रस्तुत गाथा में सर्व पुद्‌गल के भेदों का उपसंहार है।

मूल गाथा इसप्रकार है ह्न

उवभोज्जमिंदिएहिं य इंदियकाया मणो य कम्माणि।
जं हवदि मुत्तमण्णं तं सव्वं पोग्गलं जाणे।।८२।।

(हरिगीत)

जो इन्द्रियों से भोग्य हैं, अर काय–मन के कर्म जो।
अर अन्य जो कुछ मूर्त हैं वे, सभी पुद्‌गल द्रव्य हैं।।८२।।

इन्द्रियों द्वारा उपभोग्य विषय, इन्द्रियाँ, शरीर, मन, कर्म और अन्य जो कुछ भी मूर्त है, उन सबको पुद्‌गल जानो।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि स्पर्श, रस, गंध, वर्ण और शब्दरूप पाँच इन्द्रियों के विषय; स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र ह्न ये पाँच इन्द्रियाँ; औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तेजस और कार्माण ह्न ये पाँच शरीर; द्रव्यमन, द्रव्यकर्म, नोकर्म तथा इसके अतिरिक्त और भी जो नाना प्रकार की पुद्‌गल वर्गणायें हैं, ये सभी मूर्त पदार्थ पुद्‌गल द्रव्य हैं।

उक्त भाव को कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं ह्न

(दोहा)

इन्द्रिय करि जो भोगिए, अर जो इन्द्रिय काय।
चित्तकरम मूरत सबै, पुद्‌गल दरब दिखाय।।३५९।।

(सवैया इकतीसा)

इन्द्री कै विषय फास रूप रस गंध भाष,
इन्द्री वपु रसना औ नासा नैन कान है।
पाँच है सरीर नाम द्रव्य मन मनौधाम,
करम नोकरम कै परजै प्रमान है।।
अनुवर्ग वर्गना हैं द्रवनु अनंत खंध,
मूरतीक नानाभेद पुग्गल निदान है।
जे जे दृष्टि गोचर है भूमि व्योमचारी सबै,
पुग्गल कै रूप तै तै यानी के बरवान हैं।।३६६।।

(दोहा)

वरनादिक जहाँ वीस गुन, सो मूरति परमान।
सो मूरति मूरति जहाँ सो पुग्गल अभिधान।।३६७।।
पुग्गल–दरव अनेकविधि, जग में लसे अनन्त।
जथा सुमति उद्यम करै, कहत न पावै अन्त।।३६८।।

उपर्युक्त पद्यों में द्रव्य इन्द्रियों एवं उनके विषयों के भोग्य पदार्थों की चर्चा है तथा कर्म–नोकर्म, अणु, वर्ग–वर्गणा आदि उन नाना भेदों का निम्नप्रकार उल्लेख किया गया है, जो दृष्टिगोचर होते हैं, भले ही वे भूमि पर हों या आकाशचारी हों, सभी पुद्‌गल के रूप हैं।

वर्ण आदि जो पुद्‌गल के बीस गुण हैं उन्हें भोगते हुए जीव उनमें सुख मानते हैं, जबकि वे जड़ हैं, उनमें सुखगुण ही नहीं है।

कहा है कि ''पाँचों शरीर, द्रव्यमन, कर्म–नोकर्म, वर्ग–वर्गणायें, द्रव्याणुओं के अनन्त स्कन्ध, मूर्तिक पुद्‌गल द्रव्य के नाना भेद, जो–जो भी दृष्टिगोचर हैं वे सभी भूमिगत एवं आकाश में स्थित सभी पुद्‌गल के रूप हैं।''

इसी गाथा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि पाँच इन्द्रियों से जो पाँच प्रकार के विषय भोगने में आते हैं, वे जड़ हैं, मूर्तिक हैं। उनमें सुख नहीं है। जो जीव जड़ से सुख मानते हैं, उन्हें कभी भी धर्म एवं शान्ति नहीं मिलती।

स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु व श्रोत्र ह्न ये पाँच इन्द्रियाँ भी जड़ हैं। उनमें भी सुख नहीं है। कोई कहे कि इन्द्रियाँ भी तो ज्ञान में निमित्त होती है न ? उसका समाधान यह है कि भाई ! जाननेवाला तो आत्मा है; इन्द्रियाँ तो जड़ हैं। आत्मा पर पदार्थों को इन्द्रियों से नहीं जानता, स्वयं अपने ज्ञान से ही जानता है।

जिन्हें आत्मा के अतीन्द्रिय सुख के स्वाद की खबर नहीं है तथा आत्मा का अनुभव नहीं हैं, वे अज्ञानी जीव पाँच इन्द्रिय के विषयों में सुख मानते हैं।

मनुष्यों तथा तिर्यंचों के औदारिक शरीर, देवों तथा नारकियों के वैक्रियक शरीर आदि सभी शरीर जड़ हैं, पुद्‌गल हैं। अज्ञानी जीव शरीर को अपना मानकर संसार में रखड़ (भटक) रहा है।

आत्मा अशरीरी है, चैतन्य स्वभावी है, तथा शरीर इससे विरुद्ध जड़ स्वभावी है। ऐसा भेदज्ञान करने से धर्म होता है। आत्मा का ज्ञान होना तथा उसी में स्थिर होना मोक्ष का उपाय है।

ज्ञानावरणादि आठ कर्म तथा शरीर आदि नो कर्म पुद्‌गल हैं, आत्मा से जुदे हैं। आत्मा तो कर्मों से रहित एवं अमूर्तिक है। कर्म तथा नोकर्म मूर्तिक हैं। पुद्‌गल का स्वरूप आत्मा का स्वरूप नहीं है ह्न ऐसा जानकर भेदज्ञान करो।''

इस जगत में केवली ने कहा है कि ''उक्त पर पदार्थों से भेदज्ञान करने की ताकत आत्मा में है। आत्मा का ज्ञान स्वपरप्रकाशक है, स्वयं को जानता है तथा छः द्रव्यों को भी जान लेता है। छह द्रव्य सहित आत्मा की प्रतीति करना आत्मा का स्वभाव है। अतः उसे जानने का प्रयत्न कर।''

इसप्रकार मूलगाथा में तो यह कहा है कि जो विषय इन्द्रियों के उपभोग्य हैं तथा शरीर, मन, कर्म और अन्य जो भी मूर्त हैं वे सब पुद्‌गल हैं। टीका में पाँच शरीर द्रव्यमन, नोकर्म आदि नाना पुद्‌गल वर्गणाओं को पुद्‌गल द्रव्य कहा है। गुरुदेवश्री ने इनके अतिरिक्त अज्ञानियों की मान्यता बताते हुए उनके इन्द्रियों द्वारा प्राप्त विषय सुख की चर्चा की है। जो सुख नहीं सुखाभास है। ●

गाथा– ८३

विगत गाथा में कहा गया था कि पाँच इन्द्रियों द्वारा पाँच प्रकार के विषय जो भोगने में आते हैं, वे जड़ हैं, मूर्तिक हैं तथा पाँचों इन्द्रियाँ और मन भी जड़ है।

अब प्रस्तुत गाथा में धर्मास्तिकाय का व्याख्यान किया जाता है।

मूल गाथा इसप्रकार है ह्न

धम्मत्थिकायमरसं अवण्णगंधं असद्दमफ्फत्रसं।
लोगागाढं पुट्ठं पिहुलमसंखादियपदेसं ।।८३।।

(हरिगीत)

धर्मास्तिकाय अवर्ण अरस अगंध अशब्द अस्पर्श है।
लोकव्यापक पृथुल अर अखण्ड असंख्य प्रदेश हैं।।८३।।

धर्मास्तिकाय अस्पर्श, अरस, अवर्ण, अगंध और अशब्द है। लोक व्यापक है, अखण्ड, विशाल और असंख्यप्रदेशी है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि यह धर्मास्तिकाय के स्वरूप का कथन है। इसमें स्पर्श, रस, गंध और वर्ण का अभाव होने से यह धर्मद्रव्य अमूर्त स्वभाव वाला है, इसलिए अशब्द है। समस्त लोकाकाश में व्याप्त होने से लोक व्यापक है, अयुतसिद्ध अर्थात् अभिन्न प्रदेश वाला होने से अखण्ड है। निश्चय से एक प्रदेशी होने पर तथा अविभाज्य होने पर व्यवहार से असंख्य प्रदेशी है। यह धर्मद्रव्य अनादि अनन्त अरूपी वस्तु है तथा जीव और पुद्गल की गति में निमित्त होता है।

जिसप्रकार तिलों में तैल व्याप्त है, आत्मा में ज्ञान व्याप्त है, सिद्ध क्षेत्र में सिद्धजीव व्याप्त हैं; अभव्य जीवों में राग व मिथ्यात्व व्यापता है, उसीप्रकार सम्पूर्ण लोक में अचेतन, अरूपी धर्मद्रव्य व्याप्त है। आत्मा से जुदा है। आत्मा के ज्ञान का ज्ञेय है।

इसी गाथा के भाव को कवि हीरानन्दजी पद्य में कहते हैं ह्न

(दोहा)

अरस अवर्न अगंध है, सवद विना बिन फास।
सो मूरति मूरति जहाँ सो पुग्गल अभिधान।।३६९।।

(सवैया इकतीसा)

वरनादिक गुण वीस तिनका अभाव जामैं,
सोई धर्मास्तिकाय अमूरति वखानी हैं।
याही तैं असबद और सकल लोक व्यापी है,
लोक अवगाही तातैं सारे जहाँ ताही है।।
अयुतसिद्ध सगरे प्रसिद्ध विसतारी औ,
संभावना है अपार तातैं लोकाकास माहीं है।
निहचै अखंड एक देसी, व्यवहार माहीं,
असंख्यात् परदेसी स्याद परछाहीं है।।३७०।।

(दोहा)

धर्म–अस्तिकाया लसै, लोकाकास प्रमाण।
एक अखंड अनाद अकृत अनंत अमान।।३७१।।

उक्त पद्यों में कवि ने कहा है कि धर्मास्तिकाय द्रव्य अरस, अरूप, अगंध, अस्पर्श एवं अशब्द है तथा अमूर्तिक है, लोकव्यापी है, निश्चय से अखण्ड एवं व्यवहार से असंख्यात प्रदेशी है।

तथा पुद्गल द्रव्य मूर्तिक है। धर्मद्रव्य में पुद्गल जैसे बीस गुण नहीं हैं, अत: अमूर्तिक है। वह धर्मद्रव्य अशब्द और सकल लोकव्यापी है, निश्चय से अखण्ड तथा व्यवहार से असंख्यात प्रदेशी है। एक है, अखण्ड है, अनादि है, अकृत एवं अनन्त है।

अपने प्रवचन में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ''आत्मा असंख्य प्रदेशी, अरूपी, अचेतन व कायवंत है। दोनों के प्रदेशों की संख्या समान है।

गुरुदेवश्री ने भी यही कहा है कि धर्मद्रव्य निश्चय से अखण्डित है तथापि व्यवहार से असंख्य प्रदेशी है। ●

आवश्यक सूचना

पाठकों को सूचित किया जाता है कि जो भी पाठकगण जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) डाक के स्थान पर ई–मेल द्वारा (पी.डी.एफ. फॉर्मेट) प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपना नाम, ई–मेल एड्रेस व एल.एम. नं ई–मेल द्वारा सूचित करें। ई–मेल द्वारा मंगाने पर जैनपथप्रदर्शक तत्काल आपके पास पहुँच जाएगा; अत: डाक के स्थान पर ई–मेल द्वारा जैनपथप्रदर्शक अवश्य मंगायें।

ई–मेल : ptstjaipur@yahoo.com

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण
फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम	:	जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
मुद्रक	:	श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)
प्रकाशक का नाम	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 17–3–2011

प्रकाशक :
ब्र. यशपाल जैन
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

शिलान्यास समारोह संपन्न

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन परमागम मंदिर ट्रस्ट शिवपुरी के तत्त्वावधान में दिनाँक 13 व 14 फरवरी को श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर परमागम मंदिर में श्री पंच परमेष्ठी मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक संगोष्ठी के पाँच शिलान्यास मंगल प्रभावनापूर्वक सानंद संपन्न हुये।

दिनाँक 13 फरवरी को प्रात:काल जिनेन्द्र शोभायात्रा एवं विधान का आयोजन हुआ। ध्वजारोहण श्री सुरेन्द्रकुमार राहुलजी जैन कोटा परिवार द्वारा हुआ। तत्पश्चात् श्रीमती कुन्दप्रभा व उनके परिवारजन द्वारा मंगल कलश की स्थापना की गई।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिरि एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनाँक 14 फरवरी को प्रात: मंडल विधान व प्रवचन के पश्चात् शिलान्यास सभा संपन्न हुई। सभा के अध्यक्ष के रूप में श्री पदमकुमारजी पहाड़िया इन्दौर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री वीरसेनजी सर्राफ भिण्ड, श्री विनोदकुमारजी जयपुर, श्री नेमीचंदजी पहाड़िया पीसांगन, व डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई मंचासीन थे।

सभा के पश्चात् श्री वासुपूज्य दिगम्बर जिनमंदिर व श्री मुमुक्षु निलय का शिलान्यास डॉ. वासंतीबेन शाह मुम्बई द्वारा, वेदी शिलान्यास श्री विनोदकुमारजी परिवार जयपुर द्वारा, शिखर शिलान्यास श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा की ओर से श्री पदमकुमारजी पहाड़िया व सभी साधर्मीजनों द्वारा एवं जिनमंदिर के बाहर कलाकृति का शिलान्यास श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर की ओर से पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा व सभी साधर्मीजनों द्वारा अत्यंत उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सैकड़ों साधर्मियों ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर धर्मलाभ लिया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी ने किया।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित लालजीरामजी विदिशा एवं डॉ.विनोद चिन्मय विदिशा ने कराया। **– जयकुमार जैन**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

26 से 28 मार्च	जयपुर	जैन चेयर का सेमिनार
17 अप्रैल	अहमदाबाद	दि.जैन महासमिति का सम्मेलन
1 से 5 मई	देवलाली	कानजीस्वामी जयंती
6 मई	चन्देरी	शिलान्यास
10 से 12 मई	मेरठ	वेदी प्रतिष्ठा
15 मई से 1 जून	जयपुर	प्रशिक्षण शिविर
3 जून से 24 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ (U.K.-U.S.A.)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

जैन सिद्धांत एवं लब्धिसार-क्षपणासार शिविर

देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली की ओर से दिनाँक 13 से 17 अप्रैल 2011 तक **जैन सिद्धांत** शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें **पण्डित दिनेशभाई शहा, मुम्बई** प्रतिदिन छह–छह घण्टे जैन सिद्धांतों को समझायेंगे।

दिनाँक 25 से 30 जून 2011 तक **लब्धिसार–क्षपणासार शिविर** का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें **विदुषी डॉ.उज्ज्वला शहा मुम्बई** हिन्दी भाषा में अनुवादित तथा नये रूप से प्रकाशित **लब्धिसार–क्षपणासार ग्रंथ** के आधार से प्रतिदिन छह–छह घण्टे सरल भाषा में स्वाध्याय करायेंगी।

ट्रस्ट की ओर से शिविरार्थियों के आवास एवं भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था की जा रही है। आपके आने की पूर्व सूचना ट्रस्ट के देवलाली/मुम्बई ऑफिस में अवश्य देवें, ताकि समुचित व्यवस्था हो सके।**– ट्रस्टीगण**
संपर्क सूत्र – (1) पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, 173/175, मुंबादेवी रोड़, मुम्बई - 400002, टेलि. - 022/23425241, 23446099

(2) पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लामरोड़, देवलाली–नासिक 422401 (महा.), टेलि. - 05253/2491044

प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

कोटा (राज.) : यहाँ स्थापित आचार्य धरसेन दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के चतुर्थ सत्र का शुभारंभ 25 जून 2011 से होने जा रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए. समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। साथ ही छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

महाविद्यालय में छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी 10वीं उत्तीर्ण छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते पर पत्र डालकर या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। महाविद्यालय में प्रवेश की प्रक्रिया 15 मई से 1 जून 2011 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी। **संपर्क सूत्र –**

पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य)	पण्डित रतन चौधरी
मो. 9785643203,	मो. 9828063891,
8104615220	8104597337

फार्म मंगाने का पता – कुंदकुंद कहान छात्रावास, 382, राजीव गांधीनगर, कोटा (राज.)

टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिदिन होने वाले सभी प्रवचनों को आप निम्न वेबसाईट पर लाईव देख सकते हैं।
www.ustream.tv/channel/ptst

चौंसठ ऋद्धि विधान एवं दीक्षांत समारोह संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ इतवारी स्थित श्री महावीर दि.जिनमंदिर के 19वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनाँक 17 से 20 फरवरी तक श्री चौंसठ ऋद्धि विधान का आयोजन किया गया।

विधान का आयोजन श्री प्रदीपजी सागरवाले परिवार द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला।

दिनाँक 20 फरवरी को श्री महावीर विद्या निकेतन के प्रथम सत्र के छात्रों का दीक्षांत समारोह रखा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी ने की।

अन्त में श्री महावीर विद्या निकेतन द्वारा प्रकाशित संस्कार सुधा स्मारिका का विमोचन माननीय न्यायमूर्ति श्री श्रीषेणजी डोणगांवकर द्वारा श्री गणेशजी जैन (जैन प्लास्टिक) के सानिध्य में संपन्न हुआ।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित रमेशजी गायक इन्दौर द्वारा संपन्न कराये गये।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

सम्मेदशिखर : यहाँ सम्मेदशिखर की तलहटी में निर्माणाधीन कुन्दकुन्द कहान नगर में दिनाँक 24 व 25 जनवरी को वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्री विजयजी बड़जात्या परिवार इन्दौर ने तथा प्रतिष्ठा मंडप का उद्घाटन श्री राजकुमारजी जैन परिवार बड़नगर ने किया । नवनिर्मित वेदी पर श्री पार्श्वनाथ भगवान के जिनबिम्ब को विराजमान करने का अपूर्व लाभ ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, श्री सौरभजी बेलोकर एवं श्री राजेन्द्रजी गांधी मुम्बई ने प्राप्त किया। सभा का संचालन श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई ने किया।

इस अवसर पर पण्डित ऋषभजी इन्दौर द्वारा सम्यग्दर्शन विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

इस प्रसंग पर आयोजित यागमंडल विधान पण्डित सुनीलजी 'धवल', पण्डित संदीपजी जैन, पण्डित कांतिलालजी जैन एवं पण्डित रमेशजी पंचोली ने संपन्न कराया । संपूर्ण कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

गर्भगृह से निकली रत्नमयी प्राचीन मूर्तियाँ

भानपुरा–मन्दसौर (म.प्र.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में दिनाँक 14 व 15 फरवरी को दिगम्बर जैन श्रावकों द्वारा खुदाई की गई। दिनाँक 16 फरवरी को प्रात:काल पहली प्रतिमा श्री चन्द्रप्रभ भगवान की मूंगावाली नजर आई, तत्पश्चात् पुखराज की आदिनाथ भगवान एवं नीलम की अनन्तनाथ भगवान की प्रतिमाएं निकाली गईं।

इससे दो माह पूर्व भी भक्तामर विश्वधाम डोलाजी में खुदाई के अंतर्गत भगवान पार्श्वनाथ की 7 प्रतिमाएं मिली थीं।

वेदी प्रतिष्ठा सानंद संपन्न

घुवारा (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर दि. जिनमंदिर ट्रस्ट बारव द्वारा नवनिर्मित जिनमंदिर में दिनाँक 6 से 9 मार्च तक वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी के माध्यम से सरल व सुबोध भाषा में मोक्षमार्ग एवं आत्मानुभूति का स्वरूप विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन् के एक प्रवचन का भी लाभ मिला।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम बांसवाड़ा के निर्देशन में पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित नेमीचंदजी, पण्डित नीलेशजी शास्त्री ध्रुवधाम के सहयोग से संपन्न हुये।

इस अवसर पर श्री अशोककुमारजी जैन रायपुर सौधर्म इन्द्र बने। कलशारोहण श्री अजितकुमार विमलकुमार जैन परिवार द्वारा एवं शिखर पर ध्वजारोहण श्री शीलचंद प्रमोदकुमारजी बारव ने किया। प्रथम दिन ध्वजारोहण श्री वज्रसेनजी दिल्ली द्वारा किया गया। कार्यक्रम में शाहगढ़, खड़ैरी, बकस्वाहा, सागर, बड़ामलहरा, छतरपुर, भगुवां, रामटोरिया आदि स्थानों से शताधिक साधर्मियों ने लाभ लिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम डॉ. ममता जैन, बांसवाड़ा द्वारा संपन्न कराये गये।

इस अवसर पर सागर संभागीय जैन जागरण के अग्रदूत स्मरण स्तंभ का अनावरण श्री दशरथजी जैन छतरपुर द्वारा श्री कपूरचंदजी घुवारा, श्री श्रेणिकजी मलैया, श्री महेशजी मलैया सागर व श्री दामोदरजी सेठ शाहगढ़ की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री निर्मलकुमारजी जैन एवं संयोजन श्री चन्द्रभानजी जैन ने किया।

इसी प्रसंग पर वीतराग–विज्ञान पाठशाला का प्रथम वार्षिकोत्सव डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। पाठशाला भवन एवं जिनमंदिर का उद्घाटन श्रीमती केशरबाई ध.प.श्री चंद्रभानजी जैन, सुपुत्र श्री अशोककुमार, आलोककुमार, अरविन्दकुमार परिवार द्वारा किया गया।

सातवें ग्रुप शिविर का आयोजन

भिण्ड (म.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन एवं श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, भिण्ड तथा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा–देवनगर भिण्ड (म.प्र.) के संयुक्त तत्त्वावधान में **दिनांक 2 जून से 10 जून 2011 तक सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर** का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के 111 स्थानों पर शिविर लगाने का लक्ष्य है। जिसके लिये हमें लगभग 225 विद्वानों की आवश्यकता होगी। अतएव जो महानुभाव बालबोध पाठमाला के तीनों भाग, वीतराग–विज्ञान पाठमाला के तीनों भाग व छहढाला आदि पढ़ा सकते हों, वे हमें मोबाईल नम्बर 09407215571 (डॉ. सुरेश जैन) या 09887457429 (पं. विकास शास्त्री) पर सूचना देने की कृपा करें।

संपर्क सूत्र : डॉ. सुरेश जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट देवनगर कॉलोनी, इटावा रोड, भिण्ड (म.प्र.)

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

70 उन्नीसवाँ प्रवचन - डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यद्यपि आस्रवभाव सम्पूर्णत: हेय ही हैं; तथापि यह व्यवहाराभासी उनमें से हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह के पापास्रवरूप अशुभ-भावों को हेय मानता है; किन्तु अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रहत्याग के पुण्यास्रवरूप शुभभावों को उपादेय मान लेता है। वह यह नहीं जानता कि जब यह दोनों ही कर्मबंध के कारण हैं तो इनमें से एक उपादेय कैसे हो सकता है।

यद्यपि यह बात भी ठीक ही है कि हिंसादि पाँच पाप पापबंध के कारण हैं और अहिंसादि के शुभभाव पुण्यबंध के कारण हैं; व्यवहार से पाप की अपेक्षा पुण्य को ठीक कहा जाता है; तथापि अशुभ और शुभ ह्न दोनों ही भाव बंध के कारण हैं, मुक्ति के कारण नहीं; मुक्ति का कारण तो एकमात्र वीतरागभाव ही है।

इसप्रकार इस व्यवहाराभासी की आस्रवभावों में यह उपादेयबुद्धि ही मिथ्यात्व है।

उक्त बात की पुष्टि में पण्डित टोडरमलजी समयसार के बंधाधिकार में जिन कलशों के भाव को उद्धृत करते हैं; वे कलश इसप्रकार हैं ह्न

(वसन्ततिलका)

सर्वं सदैव नियतं भवति स्वकीय-
कर्मोदयान्मरणजीवितदु:खसौख्यम्।
अज्ञानमेतदिह यत्तु पर: परस्य
कुर्यात्पुमान्मरणजीवितदु:खसौख्यम् ।।१६८।।
अज्ञानमेतदधिगम्य परात्परस्य
पश्यंति ये मरणजीवितदु:खसौख्यम्।
कर्माण्यहंकृतिरसेन चिकिर्षवस्ते
मिथ्यादृशो नियतमात्महनो भवंति।।१६९।।

(हरिगीत)

जीवन-मरण अर दुक्ख-सुख सब प्राणियों के सदा ही।
अपने करम के उदय के अनुसार ही हों नियम से।।
करे कोई किसी के जीवन-मरण अर दुक्ख-सुख।
विविध भूलों से भरी यह मान्यता अज्ञान है।।१६८।।
करे कोई किसी के जीवन-मरण अर दुक्ख-सुख।
मानते हैं जो पुरुष अज्ञानमय इस बात को।।
कर्तृत्व रस से लबालब हैं अहंकारी वे पुरुष।
भव-भव भ्रमें मिथ्यामती अर आत्मघाती वे पुरुष।।१६९।।

इस जगत में जीवों के मरण, जीवन, दु:ख व सुख सब सदैव नियम से अपने कर्मोदय से होते हैं। कोई दूसरा पुरुष किसी दूसरे पुरुष के जीवन-मरण और सुख-दु:ख को करता है ह्न ऐसी मान्यता अज्ञान है।

इस अज्ञान के कारण जो पुरुष एक पुरुष के जीवन-मरण और सुख-दु:ख को दूसरे पुरुष के द्वारा किये हुए मानते हैं, जानते हैं; पर कर्तृत्व के इच्छुक वे पुरुष अहंकार से भरे हुए हैं और आत्मघाती मिथ्यादृष्टि हैं।

समयसार के बंधाधिकार के उक्त प्रकरण में यह सिद्ध किया गया है कि प्रत्येक जीव के जीवन-मरण और सुख-दु:ख स्वयंकृत हैं और उनमें कर्मोदय निमित्त है। अन्य जीव किसी अन्य जीव के जीवन-मरण और सुखों का कर्ता नहीं है, कारण भी नहीं है।

उक्त कथन को आधार बनाकर यहाँ यह सिद्ध किया गया है कि कोई किसी को मार नहीं सकता, दु:खी नहीं कर सकता; इसकारण दूसरे जीवों को मारने और दु:खी करने के पापभाव जिसप्रकार निरर्थक हैं; उसीप्रकार जब कोई जीव किसी अन्य जीव को बचा नहीं सकता, दु:खी नहीं कर सकता तो फिर उन्हें बचाने या सुखी करने का भाव भी पूर्णत: निरर्थक ही है।

तात्पर्य यह है कि मारने व दु:खी करने के भावों के समान ही निरर्थक बचाने और सुखी करने के भाव हैं; क्योंकि उक्त दोनों प्रकार के शुभाशुभभाव पर में कुछ भी करने में समर्थ नहीं हैं। इसप्रकार पुण्यबंध के कारणरूप ये बचाने व सुखी करने के भाव और पापबंध के कारणरूप मारने व दुखी करने के भाव ह्न दोनों ही भाव मिथ्याध्यवसाय हैं, बंध के कारण हैं; इसलिए आस्रव हैं, हेय हैं; उपादेय नहीं।

यही कारण है कि पण्डितजी अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं कि **हिंसादिवत् अहिंसादिक को भी बंध का कारण जानकर हेय ही मानना।**

अपनी बात आगे बढ़ाते हुए पण्डितजी लिखते हैं कि ह्न

''हिंसा में मारने की बुद्धि हो; परन्तु उसकी आयु पूर्ण हुए बिना मरता नहीं है, यह अपनी द्वेषपरिणति से आप ही पाप बाँधता है।अहिंसा में रक्षा करने की बुद्धि हो; परन्तु उसकी आयु अवशेष हुए बिना वह जीता नहीं है, यह अपनी प्रशस्त रागपरिणति से आप ही पुण्य बाँधता है।

इसप्रकार यह दोनों हेय हैं; जहाँ वीतराग होकर ज्ञाता-दृष्टारूप प्रवर्ते वहाँ निर्बन्ध है सो उपादेय है।[१]''

जब-जब दूसरे के संबंध में कुछ भी करने की बात आती है तो यही कहा जाता है कि किसी का बुरा मत करो, भला करने की ही सोचो; पर इस बात पर कोई विचार ही नहीं करता कि पहले यह निर्णय तो हो कि हम पर का कुछ कर भी सकते हैं या नहीं ?

अरे, भाई ! जब किसी का भला-बुरा कुछ कर ही नहीं सकते तो फिर यह प्रश्न ही खड़ा नहीं होता कि भला करें या बुरा करें।

ऐसी स्थिति में यह किंकर्तव्यविमूढ हो जाता है और कहने लगता है कि आखिर हम करें क्या ?

इसके उत्तर में यहाँ कहा गया है कि **धर्म करना है तो वीतरागभावरूप होकर ज्ञाता-दृष्टारूप प्रवर्तन करो।**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२६

ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उपस्थित होता है कि वर्तमान स्थिति में इन रागभावों का छूटना तो संभव नहीं है तो फिर आखिर हम करें क्या ?

उत्तर में पण्डितजी आदेश देते हुए कहते हैं ह्न

''सो ऐसी दशा न हो तबतक प्रशस्तरागरूप प्रवर्तन करो; परन्तु श्रद्धान तो ऐसा रखो कि यह भी बन्ध का कारण है, हेय है; श्रद्धान में इसे मोक्षमार्ग जाने तो मिथ्यादृष्टि ही होता है।[१]''

यहाँ तक तो आस्रवतत्त्व संबंधी भूलों की सामान्य चर्चा की। अब अत्यन्त संक्षेप में आस्रव के चार प्रकारों की चर्चा करते हैं। उक्त संदर्भ में पण्डितजी लिखते हैं ह्न

''तथा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग ह्न ये आस्रव के भेद हैं; उन्हें बाह्यरूप तो मानता है, परन्तु अंतरंग में इन भावों की जाति को नहीं पहिचानता।

वहाँ अन्य देवादि के सेवनरूप गृहीत मिथ्यात्व को मिथ्यात्व जानता है, परन्तु अनादि अगृहीत मिथ्यात्व है, उसे नहीं पहिचानता।

तथा बाह्य त्रस-स्थावर की हिंसा तथा इन्द्रिय-मन के विषयों में प्रवृत्ति उसको अविरति जानता है; हिंसा में प्रमाद परिणति मूल है और विषय-सेवन में अभिलाषा मूल है, उसका अवलोकन नहीं करता।

तथा बाह्य में क्रोधादि करना उसको कषाय जानता है, अभिप्राय में राग-द्वेष बस रहे हैं, उनको नहीं पहिचानता।

तथा बाह्य चेष्टा हो उसे योग जानता है, शक्तिभूत योगों को नहीं जानता। इसप्रकार आस्रवों का स्वरूप अन्यथा जानता है।[२]''

आस्रवभावों की उक्त संक्षिप्त चर्चा में एक ही बात कही गई है कि यह व्यवहाराभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि जीव उक्त चार प्रकार के आस्रवभावों के बाह्यरूप से तो परिचित है; पर उनके अंतरंग अभिप्राय को नहीं पहिचानता।

उक्त संदर्भ में व्यवहाराभासी की प्रवृत्ति की वर्तमान स्थिति का चित्रण करते हुए पण्डितजी लिखते हैं ह्न

''तथा राग-द्वेष-मोहरूप जो आस्रवभाव हैं, उनका तो नाश करने की चिन्ता नहीं और बाह्यक्रिया अथवा बाह्य निमित्त मिटाने का उपाय रखता है; सो उनके मिटाने से आस्रव नहीं मिटता।

द्रव्यलिंगी मुनि अन्य देवादिक की सेवा नहीं करता, हिंसा या विषयों में नहीं प्रवर्तता, क्रोधादि नहीं करता, मन-वचन-काय को रोकता है; तथापि उसके मिथ्यात्वादि चारों आस्रव पाये जाते हैं।

तथा कपट से भी वे कार्य नहीं करता है, कपट से करे तो ग्रैवेयक पर्यन्त कैसे पहुँचे। इसलिए जो अंतरंग अभिप्राय में मिथ्यात्वादिरूप रागादिभाव हैं, वे ही आस्रव हैं।[३]''

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२६ २. वही, पृष्ठ २२६-२२७
३. वही, पृष्ठ २२७

देखो, यहाँ कितने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि इस व्यवहाराभासी को मोह-राग-द्वेषरूप आस्रवभावों को मिटाने की तो चिन्ता नहीं है; बस इसका ध्यान तो बाह्य क्रियाकाण्ड पर ही रहता है, बाह्य निमित्तों में फेरफार करने में ही रहता है।

एक तो निमित्तों में फेरफार करना इसके हाथ में नहीं है, दूसरे बाह्य क्रिया और निमित्तों में फेरफार से भी आस्रवभाव मिटते नहीं हैं।

अपनी बात सिद्ध करने के लिए वे यहाँ द्रव्यलिंगी मुनि का उदाहरण देते हैं। कहते हैं कि द्रव्यलिंगी मुनि गृहीत मिथ्यात्व के कारणभूत अन्य देवादिक की सेवा नहीं करता, हिंसादि पापों व पंचेन्द्रिय विषयों में नहीं प्रवर्तता, क्रोधादि कषायें करता भी दिखाई नहीं देता और मन-वचन-काय की चेष्टा को रोकता है; तथापि उसके मिथ्यात्वादि चारों आस्रवभाव पाये जाते हैं।

बाह्य क्रिया करने और निमित्तों के मेटने से क्या होता है; असली आस्रवभाव तो अंतरंग अभिप्राय में मौजूद मिथ्यात्वादिरूप रागादिभाव ही हैं।

ये व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि जीव बंधतत्त्व के संबंध में भी लगभग इसीप्रकार की गलतियाँ करते हैं। शुभभाव से पुण्यबंध होता है, इससे उसे अच्छा मानता है; अशुभभाव से पापबंध होता है, इसलिए उसे बुरा मानता है; किन्तु दोनों भाव बंधरूप हैं, संसार के कारण हैं; इसलिए बुरे ही हैं ह्न ऐसा नहीं जानता।

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी एक महत्त्वपूर्ण तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं; जो इसप्रकार है ह्न

''तथा शुभ-अशुभ भावों से पुण्य-पाप का विशेष तो अघातिकर्मों में होता है; परन्तु अघातिकर्म आत्मगुण के घातक नहीं हैं।

तथा शुभ-अशुभभावों में घातिकर्मों का तो निरन्तर बंध होता है, वे सर्व पापरूप ही हैं और वही आत्मगुण के घातक हैं।

इसलिए अशुद्ध (शुभ और अशुभ) भावों से कर्मबंध होता है, उसमें भला-बुरा जानना वही मिथ्या श्रद्धान है।[१]''

तात्पर्य यह है कि शुभभावों से अकेला पुण्यबंध ही होता है ह्न ऐसा नहीं है; क्योंकि शुभभाव के काल में भी घातिया कर्मों का बंध होता रहता है। घातिया कर्म तो सभी पापरूप हैं, आत्मा के गुणों के घातक हैं।

अत: शुभभाव भी अशुभभावों के समान हेय ही हैं, उन्हें उपादेय मानना, मुक्ति का कारण मानना बंधतत्त्वसंबंधी भूल है।

यह व्यवहाराभासी संवरतत्त्व के संबंध में भी इसीप्रकार की भूलें करता है। **जो अहिंसादिरूप शुभास्रव भाव हैं, उन्हें संवर मानता है, संवर का कारण मानता है। यह बात किसी भी अपेक्षा सत्य नहीं हो सकती; क्योंकि जिस भाव से बंध होता है, उसी भाव से संवर कैसे हो सकता है ?** (क्रमश:)

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२७

17 मार्च 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में -

विदाई समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 1 मार्च 2011 को श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: त्रिमूर्ति जिनमंदिर में जिनेन्द्र पूजन का आयोजन पण्डित अंकितजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री एवं विदुषी श्रुति शास्त्री के सहयोग से किया गया।

इस अवसर पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुशीलकुमारजी गोदीका जयपुर, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. आनंदजी पुरोहित (प्राचार्य-महाराजा संस्कृत कॉलेज), डॉ. श्रीयांसजी सिंघई (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), डॉ. कमलेशजी जैन (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), डॉ. ओमप्रकाशजी भड़ाना (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री विपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित संतोषजी शास्त्री एवं पण्डित तपिशजी शास्त्री मंचासीन थे।

कार्यक्रम में अनेक विद्यार्थियों ने अपने पाँच वर्षों के अनुभव सुनाते हुये महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया एवं स्वयं को आध्यात्म विद्या पढ़ने का विशेष सौभाग्यशाली विद्यार्थी बताया। महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों ने शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को भविष्य को उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा दी।

मङ्गलाचरण प्रफुल्ल शास्त्री ने एवं संचालन आशीष टोंक, अंकित छिन्दवाड़ा, विवेक दिल्ली, रविन्द्र बकस्वाहा, अशोक बकस्वाहा एवं प्रतीति पाटील ने किया।

डॉ. भारिल्ल ने दूसरे दिन अपने पूरे व्याख्यान में धार्मिक अध्ययन को लौकिक अध्ययन से श्रेष्ठ व अतुलनीय सिद्ध किया।

हार्दिक बधाई !

फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी चि. नवनीत जैन एवं करहल (उ.प्र.) निवासी सौ. अनन्या जैन का विवाह दिनाँक 27 फरवरी को संपन्न हुआ। इसके उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 300-300/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

आध्यात्मिक गोष्ठी संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्दकहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर सिद्धायतन-द्रोणगिरि में दिनाँक 2 से 6 मार्च 2011 तक ब्र.रवीन्द्रजी आत्मन् के सानिध्य में एक आध्यात्मिक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: एवं दोपहर दो-दो घंटे ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन् एवं अन्य विद्वानों द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार की 13वीं गाथा के आधार पर प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला। सायंकाल 7.30 से 10 बजे तक प्रतिदिन गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें नय रहस्य, स्वाध्याय, दान, सप्त व्यसन, श्रावक के अष्ट मूलगुण आदि विषयों पर चर्चा की गई।

गोष्ठी में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित सुदीपजी बीना, पण्डित निर्मलकुमारजी सागर एवं पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ़ के वक्तव्यों का लाभ मिला।

गोष्ठी का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण श्री हर्षदभाई मुम्बई द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुम्बई, दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश से लगभग 400 मुमुक्षु भाई-बहनों ने लाभ लिया।

विद्वान की आवश्यकता

नातेपुते-सोलापुर (महा.) में बच्चों व बड़ों को धार्मिक अध्ययन कराने हेतु विद्वान की आवश्यकता है। निम्न बातों पर विशेष ध्यान दें -

- विद्वान विवाहित हो (मराठी, हिन्दी व गुजराती भाषा का ज्ञान हो)
- आपके आवास की व्यवस्था उपलब्ध रहेगी।
- आयु 35-40 से अधिक हो।
- वेतन की अपेक्षा लिखें।

संपर्क सूत्र - श्री इंद्रजित गांधी, मो. 9890114481, 9422647480
ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन पाठशाला, नातेपुते, ता. माळशिरस जिला-सोलापुर, 413109 (महा.)

प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : info@ptst.in **फैक्स :** (0141) 2704127